श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

तकनीकी शिक्षा और मानव मूल्य

दिनांक 04 मई, 2020 **समय दोपहर : 01.15 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

कुलपति श्री एच डी चारण, श्री वाइ एन सिंह, श्रीमती अलका स्वामी, अभिभावकगण और छात्र–छात्राएं,

तकनीकी शिक्षा और मानव मूल्य विषय पर आयोजित इस वेबीनार में शामिल होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। कोविड–19 के इस दौर में सब कुछ बदल रहा है। हमें इन परिवर्तनों के अनुरूप कार्य करना होगा, इसके लिए अभी से मानसिक रूप से तैयार होना होगा। आन लाइन शिक्षा आवश्यकता बनती जा रही है। कोरोना वैश्विक महामारी के दौर से हमें बहुत कुछ सीखना होगा। यह बीमारी जल्दी समाप्त होने वाली नही है और न ही लाक डाउन इस समस्या का स्थाई समाधान है। अचानक आये वायरस के प्रभाव को रोकने के लिए हाल फिलहाल उठाये कदम से हमें राहत तो मिल गई है। अब हमें अनुसंधान करके इसका स्थायी समाधान खोजना होगा। साथ ही जीवन को नये तरीके से जीने के रास्ते भी तलाशने होगें।

अब यदि ऐसी ही परिस्थितियां बनी रहती हैं तो हमें हमारी युवा पीढी को मानवता से जुडी सभी बातें भी आनलाइन ही समझानी होंगी। शिक्षा के साथ मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा को युवाओं को पढाना आवश्यक है।

नैतिकता, कर्तव्य, ईमानदारी, दया और करुणा में मानव जीवन के मूल्य समाहित है। मानव मूल्यों की अवधारणा

को प्रत्येक नागरिक को समझना चाहिए। हमारा भविष्य आज के युवा हैं। प्रत्येक युवा को पता होना चाहिए कि दूसरों के साथ कैसे तालमेल बिठाया जाए। समूह या परिवार के लाभ के लिए अपने स्वार्थ और सुखों का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

परिवार में संघर्ष से बचें और सद्भाव से रहें। जीवनयापन की ऐसी योजनाबद्ध पद्धति को सभी लोगों को वास्तव में सभ्य बनाने के लिए, सभी संस्थानों में एक समग्र मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा को विकसित किया जाना चाहिए। युवाओं के अध्ययन के क्षेत्र अलग–अलग हो सकते हैं, लेकिन मानव मूल्य मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

समग्र मानव मूल्य शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को समझ सकता है। अर्थात उसके शरीर, मन, ज्ञान, चेतना, आनुवंशिक केंद्र और मस्तिष्क जीवन के सभी अनुभवों को संग्रहीत कर मानव जीवन को समझ सकता है। मानव जीवन के प्रारम्भ यानि युवा जीवन में समृद्धि, खुशी और समाज की शांति के लिए मानव मूल्यों की शिक्षा को दिया जाना आवश्यक है।

शिक्षा की इस अनिवार्य प्रणाली की कमी के कारण ही जीवन में गरीबी, अपराध, संघर्ष और विवाद जैसी

समस्याओं से सामना करना होता है। मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा से समाज में उत्पीड़न समाप्त होगा और चेतना का विकास हो सकेगा। हम लोग अपने जीवन के उद्देश्य से भटकेंगे नही बल्कि सही दिशा की ओर बढ सकेंगे।

मानव मूल्य की शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण का पाठ वैदिक काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण रहा है। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण का स्थान निर्विवाद था। शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण का माध्यम धार्मिक था और इसलिए धार्मिक संस्थानों ने अपने काल और क्षेत्र के दौरान चरित्र निर्माण में व्यक्तियों को शिक्षित करने का प्रयास किया।

भारत में अंग्रेजों के आने के बाद भारतीय शिक्षा का उद्देश्य बदल गया था। इस प्रकार उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य बहुत सीमित था। विषयों के ज्ञान सहित कुछ कार्यात्मक साक्षरता शुरू की गई थी। केवल 1882 के शिक्षा आयोग में नैतिक शिक्षा की सिफारिश की गई थी। स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद कई आयोगों और समितियों ने चरित्र शिक्षा, धार्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा की सिफारिश की। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को व्यापक रूप से परिभाषित

किया गया था और इसे मानव मूल्य शिक्षा में शामिल किया गया था।

विद्यार्थी आत्मकेंद्रित उद्देश्यों के लिए या व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय ज्ञान के लिए प्रदान किए गए कौशल का उपयोग कैसे करेगा, शिक्षा से ही इस बात का निर्धारण हो सकता है। मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा ही मानव आचरण और मानवीय समाज के विकास की सुविधा प्रदान करती है।

सही समझ के कारण हम ऐसे बिंदु पर पहुंच सकते हैं, जहां हम अपनी सामूहिक शिक्षा प्रणाली की समस्याओं, संसाधन की कमी, जानवरों के विलुप्त होने, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद और यहां तक कि पृथ्वी पर मानव जाति के लिए खतरे के परिणामों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता को शिक्षा के विभिन्न आयोगों और विशेषज्ञ समितियों ने प्रकाश डाला है।

युवाओं को मानवीय आचरण के साथ सुखी और समृद्ध जीवन जीना सिखाना ही शिक्षा का उद्देश्य है। छात्रों को मूल्य शिक्षा से जोडकर और कौशलबद्ध करके शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है ।

छात्रों को समझ, प्रतिबद्धता, क्षमता और मानवीय आचरण के साथ रहने और समाज में मानवता का दिग्दर्शन कराना चाहिए।

1 मूल्य शिक्षा में अपनी समझ को साझा करके सही समझ विकसित करें

2 तकनीकी शिक्षा को सीखकर सही कौशल का विकास करना।

3 शिक्षा की अवधि के दौरान सही जीवन जीने का अभ्यास करें।

मानव के साथ एक ऐसे रिश्ते में रहना जिससे आपसी खुशी बढ़े।

जीवन की सभी सुख–सुविधाओं के बावजूद, दिन–प्रतिदिन जीवन में तनाव, परिवार प्रणाली पर संकट, अपराध, आतंकवाद समाज में बढ़ रहे हैं। प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, असाध्य रोग जैसी समस्याएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। शिक्षा की वर्तमान स्थिति अब ऐसे स्तर पर पहुँच गई है जहाँ यह मानव के अस्तित्व के लिए ही खतरा बन गया है।

इस धरती पर सभी मानव एक खुशहाल और समृद्ध जीवन जीना चाहते हैं। यह केवल चार स्तरों यानि स्वयं,

परिवार, समाज और प्रकृति के अस्तित्व में सद्भाव में रहकर प्राप्त किया जा सकता है। जिसके लिए यह सीखना अतिआवश्यक है कि सहअस्तित्व ही अस्तित्व है।

एक छात्र अपने जीवन का औसतन 20–22 साल औपचारिक शिक्षा के लिए बिताता है। अगर मूल्य शिक्षा दुनिया के हर छात्र तक प्रभावी रूप से पहुंचती है, तो मानव जीवन की जटिलताओं को आसानी से हल किया जा सकता है। खुशहाल और समृद्ध जीवन जिया जा सकता है।

धन्यवाद। जय हिन्द।